कलियुगाब्द ५१२५
विक्रम संवत् २०८१
वर्ष २०२५

Kaliyugabd 5125
Vikram Samvat 2081
Varsha 2025

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, मध्यप्रदेश

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन का प्रमाणित कैलेण्डर

कैलेण्डर के बारे में

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन का निर्माण सन् 1719 में जयपुर के महाराजा सवाई राजा जयसिंह द्वितीय द्वारा करवाया गया था। शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन का प्रकाशन सन् 1942 से प्रतिवर्ष दृश्य ग्रह स्थिति पञ्चाङ्ग एवं 2021 से आकाश अवलोकन मार्गदर्शिका का प्रकाशन किया जा रहा है। जन-सामान्य की सुविधा को देखते हुए वर्ष 2021 से कैलेण्डर का प्रकाशन भी प्रारम्भ किया गया है। इस कैलेण्डर के प्रकाशन का उद्देश्य नागरिकों को हिन्दी तिथियों के प्रारम्भ एवं समाप्ति का समय, म.प्र. शासन के अवकाश तथा माह की खगोलीय घटनाओं की प्रमाणित जानकारी प्रदान करना है।

विशेषताएँ

जीवाजी वेधशाला कैलेण्डर में विक्रम संवत् के अनुसार माह, हिन्दी तिथियाँ, म.प्र. शासन द्वारा घोषित शासकीय अवकाश एवं माह की प्रमुख खगोलीय घटनाओं को स्थान दिया गया है। विशेष बात यह है कि प्रत्येक दिनांक पर हिन्दी तिथि का समाप्ति समय 24 घण्टे फॉर्मेट (रेलवे समय के अनुसार) में दिया गया है। तिथि समाप्ति के उपरांत अगली तिथि प्रारंभ होती है।

जैसे- 1 जनवरी 2025 को पौष शुक्ल पक्ष की प्रथमा तिथि 03:22:04 बजे पर समाप्त होकर द्वितीया तिथि प्रारंभ हो रही है। जो दिनांक 2 जनवरी 2025 को 02.24.06 बजे (रात्रि 02:24.06 बजे) पर समाप्त हो रही है। इसके तुरन्त बाद कृष्ण पक्ष की तृतीया तिथि प्रारम्भ होती है। इसी प्रकार 03 जनवरी 2025 को शुक्ल पक्ष की तृतीया तिथि प्रातः 01:08.09 बजे पर समाप्त हो रही है तथा चतुर्थी तिथि प्रारम्भ हो रही है परन्तु चतुर्थी तिथि 03 जनवरी 2025 को ही 23:40:01 बजे (रात्रि 11:40:01 बजे) समाप्त हो रही है।

इस वर्ष की थीम भारतीय कालगणना को रखा गया है। जिसके अंतर्गत माहवार काल की अवधारणा, कालमापन की इकाईयाँ, हिन्दी तिथियों का वैज्ञानिक आधार, सप्ताह, माह व वर्ष की अवधारणा, देवताओं व असुरों के दिन-रात, युग, ब्रह्मा की आयु, संवत्सर, पञ्चाङ्ग तथा संकल्प मंत्र को स्थान दिया गया है। हमें विश्वास है कि यह जानकारी भारतीय कालगणना की समझ के लिये अत्यंत उपयोगी रहेगी।

शा. जीवाजी वेधशाला, उज्जैन
का प्रकाशन

कैलेण्डर-2025 | मूल्य ₹101/- मात्र

कलियुगाब्द ५१२५
विक्रम संवत् २०८१
वर्ष २०२५

Kaliyugabd 5125
Vikram Samvat 2081
Varsha 2025

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, मध्यप्रदेश

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन का प्रमाणित कैलेण्डर

भारतीय प्राचीन खगोल विज्ञान - एक परिचय

भारतीय ज्योतिष-खगोल का प्राचीनतम् इतिहास सुदूर भूतकाल के गर्भ में छिपा हुआ है। भारतीय खगोल विज्ञान का प्रागैतिहासिक काल से लेकर आधुनिक काल तक का लंबा इतिहास है। भारतीय खगोल विज्ञान की शुरुआती जड़ें सिंधु घाटी सभ्यता की अवधि या उससे पहले की हो सकती हैं। खगोल विज्ञान बाद में वेदांग या वेदों के अध्ययन से जुड़े सहायक विषयों में से एक के रूप में विकसित हुआ, जो 1500 ईसा पूर्व या उससे अधिक पुराना है।

खगोल विज्ञान को वेद का नेत्र कहा गया है,
''वेदस्य निर्मलम् चक्षुर्ज्योतिः शास्त्रमकल्मषम्।''

क्योंकि सम्पूर्ण सृष्टियों में होने वाले व्यवहार का निर्धारण काल से होता है और काल का ज्ञान ग्रहीय गति से होता है। अतः प्राचीन काल से खगोल विज्ञान वेदांग का हिस्सा रहा है। ऋग्वेद, शतपथ ब्राह्मण, तैत्तिरीय संहिता आदि ग्रथों में नक्षत्र, चान्द्रमास, सौरमास, मल-मास, ऋतु परिवर्तन, उत्तरायण, दक्षिणायन, आकाशचक्र, सूर्य की महिमा, कल्प का माप आदि के संदर्भ में अनेक उदाहरण मिलते हैं। इस हेतु ऋषि प्रत्यक्ष अवलोकन करते थे। यजुर्वेद के 18वें अध्याय के चालीसवें मंत्र में यह बताया गया है कि सूर्य किरणों के कारण चन्द्रमा प्रकाशमान है।

प्राचीन भारतीय अपने यज्ञ तथा अन्य धार्मिक अनुष्ठान, ग्रहों की स्थिति के अनुसार शुभ लग्न देखकर किया करते थे। शुभ लग्न जानने के लिए उन्होंने खगोल विज्ञान का विकास किया था। वैदिक आर्य सूर्य की उत्तरायण और दक्षिणायन गति से परिचित थे। वैदिककालीन खगोल विज्ञान का एक मात्र ग्रंथ 'वेदांग ज्योतिष' है। इसकी रचना 'लगध' ऋषि ने ईसा से लगभग 1200 वर्ष पूर्व की थी। महाभारत में भी खगोल विज्ञान से संबंधित जानकारी मिलती है। महाभारत में चंद्रग्रहण और सूर्यग्रहण की चर्चा है। इस काल के लोगों को ज्ञात था कि ग्रहण केवल अमावस्या और पूर्णिमा को ही हो सकते हैं। इस काल के लोगों का ग्रहों की गति के विषय में भी अच्छा ज्ञान था।

प्राचीन भारत में यंत्रों का उपयोग कर खगोल का निरीक्षण करने की पद्धति रही है। आर्यभट्ट के समय आज से 1500 से अधिक वर्ष पूर्व पाटलीपुत्र में वेधशाला (Observatory) थी, जिसका प्रयोग कर आर्यभट्ट ने कई निष्कर्ष निकाले। इसी तरह वराहमिहिर, भास्कराचार्य जैसे प्राचीन वैज्ञानिकों ने खगोल सम्बंधित अभूतपूर्व खोजें कीं। आज यही प्राचीन खोजें पश्चिमी देशों द्वारा किये जा रहे खगोलीय अन्वेषण का आधार हैं।

कलियुगाब्द ५१२५
विक्रम संवत् २०८१
वर्ष २०२५

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, मध्यप्रदेश

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन का प्रमाणित कैलेण्डर

Kaliyugabd 5125
Vikram Samvat 2081
Varsha 2025

जनवरी

काल की अवधारणा

कालगणना शब्द व्यापक है। जब भी हम कालगणना के सम्बन्ध में विचार करते हैं। तो हमें सबसे पहले काल को समझना होगा कि काल का प्रारम्भ कब से हुआ। यह ब्रह्मांड काल के सापेक्ष है। काल सृष्टि संचालन का मूल है। पुराणों में काल को सृष्टिकर्ता एवं संहारकर्ता दोनों माना गया है-

"कालः सृजति भूतानि, कालः संहरति प्रजा"

काल को वैदिक साहित्य में विभिन्न रूपों में वर्णित किया गया है। ऋग्वेद संहिता मंत्र(10-42-29) में काल शब्द का प्रयोग समस्त क्रियाओं- प्रतिक्रियाओं के निर्देशार्थ उपलब्ध है।अथर्ववेद के मंत्रों (29-53/9-10) एवं (19-54-1-5) में काल के प्रति उच्चतम धारणा व्यक्त की गई है। शतपथ ब्राह्मण के मंत्र (1-7-3-3) तथा (2-4-2-4) में भी काल का प्रयोग निर्दिष्ट ज्ञान के लिए किया गया है। छांदोग्य उपनिषद् में मंत्र संख्या (2-31-1) में काल शब्द का प्रयोग आन्तक अर्थ में हुआ है। वृहदारण्यक उपनिषद् के मंत्र संख्या (1-2-4) में काल शब्द का प्रयोग निश्चित काल के लिए किया गया है। श्वेताश्वतरोपनिषद् (1/1-2) में काल शब्द का प्रयोग सृष्टिमूल के विषय में किया गया है। महाभाष्य के अनुसार यह भूत, भविष्य एवं वर्तमान को प्रदर्शित करता हुआ उच्चतम रूप में विद्यमान है।

भगवद् गीता के अनुसार काल ही इस सृष्टि की संरचना एवं संहार का कारण है -

कालः पचति भूतानि, सर्वाण्येव सहात्मना।
कान्ते सपक्वस्तेनैव सहाव्यक्ते लयंव्रजेत।।

श्रीमद्भागवत में राजा परीक्षित महर्षि शुकदेव से जिज्ञासा करते हैं कि काल क्या है ? इसका सूक्ष्मतम एवं वृहत्तम स्वरूप क्या है?

शुकदेव मुनि समझाते हैं विषयों का रूपान्तर (परिवर्तन) ही काल का आकार है। उसी को निमित्त बना, वह काल तत्व अपने को अभिव्यक्त करता है, वह अव्यक्त से व्यक्त होता है। काल का सूक्ष्मतम रूप परमाणु एवं वृहत्तम रूप ब्रम्हा की आयु है।

सूर्य सिद्धान्त के अनुसार -

लोकानामन्तकृत् कालः कालोऽन्यः कलनात्मकः।
स द्विधा स्थूलसूक्ष्मत्वान्मूर्तश्चामूर्त उच्यते।। (सूर्य सिद्धांत-मध्यमाधिकार श्लोक 10)

एक प्रकार का काल संसार को नाश करता है और दूसरे प्रकार का कलनात्मक है अर्थात् जाना जा सकता है। यह भी दो प्रकार का होता है, एक स्थूल और दूसरा सूक्ष्म। स्थूल नापा जा सकता है, इसलिए मूर्त कहलाता है और सूक्ष्म नापा नहीं जा सकता इसलिए अमूर्त कहलाता है। प्रथमकाल जो परम तत्व के रूप में सृष्टि के मूल में विद्यमान है एवं दूसरा व्यवहार में प्रयुक्त होने वाला है। पहले प्रकार के काल की कल्पना भी नहीं हो सकती क्योंकि न तो यह मालूम है, कि यह कब से प्रारंभ हुआ और न ही यह मालूम है, कि उसका अंत कब होगा। यह अखंड और व्यापक है; परंतु इसके बीच में ही अथवा इसके उपस्थित रहते ही लोक का अंत हो जाता है। ब्रह्मा उत्पन्न होते हैं, सृष्टि रचते हैं तथा लय करते हैं। परंतु काल बना ही रहता है, इसलिए इसको लोकों का अंत कर देने वाला, नाश कर देने वाला कहते हैं। इसीलिए मृत्यु को भी काल कहते हैं। काल का जो थोड़ा सा मध्य भाग जाना जा सकता है, उसमें भी जो बहुत छोटा है, वह नापा नहीं जा सकता है, उसे अमूर्त कहते हैं। नापने में जितनी सूक्ष्मता होगी अमूर्त काल की परिभाषा भी नयी होती जाएगी, अर्थात् काल अखण्ड और अनन्त है किन्तु गणनीय काल भी है।

कलनात्मक काल के मूर्त एवं अमूर्त भेद को गणितीय आधार पर माह फरवरी में व्यक्त किया गया है।

पौष - माघ | **- JANUARY -** | Pausha - Magh

माह की खगोलीय घटनाएँ

3 जनवरी – चन्द्रमा - शुक्र युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

10 जनवरी – चन्द्रमा - बृहस्पति युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

19 जनवरी - शुक्र - शनि युति । सूर्यास्त के बाद, पश्चिम दिशा में 46 अंश ऊपर शुक्र एवं शनि ग्रह एक साथ दिखाई देंगे। शुक्र लट्टू की तरह चमकदार दिखाई देगा।

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
			1 पौष शुक्ल प्रथमा 03:22.4 तक द्वितीया प्रारम्भ	**2** शुक्ल द्वितीया 02:24.6 तक तृतीया प्रारम्भ	**3** शुक्ल तृतीया 01:08.9 तक चतुर्थी प्रारम्भ चतुर्थी 23:40.1 तक पंचमी प्रारम्भ	**4** शुक्ल पंचमी 22:01.6 तक षष्ठी प्रारम्भ
5 पौष शुक्ल षष्ठी 20:15.8 तक सप्तमी प्रारम्भ	**6** शुक्ल सप्तमी 18:24.1 तक अष्टमी प्रारम्भ	**7** शुक्ल अष्टमी 16:27.3 तक नवमी प्रारम्भ	**8** शुक्ल नवमी 14:26.3 तक दशमी प्रारम्भ	**9** शुक्ल दशमी 12:23.0 तक एकादशी प्रारम्भ	**10** शुक्ल एकादशी 10:20.1 तक द्वादशी प्रारम्भ	**11** शुक्ल द्वादशी 08:22.6 तक त्रयोदशी प्रारम्भ
12 पौष शुक्ल त्रयोदशी 06:34.2 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**13** शुक्ल चतुर्दशी 05:03.4 तक पूर्णिमा प्रारम्भ	**14** पौष शुक्ल पूर्णिमा 03:56.9 तक माघ कृष्ण प्रथमा प्रारम्भ	**15** माघ कृष्ण प्रथमा 03:21.7 तक द्वितीया प्रारम्भ	**16** कृष्ण द्वितीया 03:23.7 तक तृतीया प्रारम्भ	**17** कृष्ण तृतीया 04:06.7 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**18** कृष्ण चतुर्थी 05:30.6 तक पंचमी प्रारम्भ
19 माघ कृष्ण पंचमी 07:31.2 तक षष्ठी प्रारम्भ	**20** कृष्ण षष्ठी 09:59.0 तक सप्तमी प्रारम्भ	**21** कृष्ण सप्तमी 12:40.2 तक अष्ठमी प्रारम्भ	**22** कृष्ण अष्ठमी 15:18.5 तक नवमी प्रारम्भ	**23** कृष्ण नवमी 17:38.0 तक दशमी प्रारम्भ	**24** कृष्ण दशमी 19:25.5 तक एकादशी प्रारम्भ	**25** कृष्ण एकादशी 20:32.4 तक द्वादशी प्रारम्भ
26 माघ कृष्ण द्वादशी 20:55.2 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**27** कृष्ण त्रयोदशी 20:35.1 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**28** माघ कृष्ण चतुर्दशी 19:36.5 तक अमावस्या प्रारम्भ	**29** माघ कृष्ण अमावस्या 18:05.9 तक प्रथमा प्रारम्भ	**30** माघ शुक्ल प्रथमा 16:11.1 तक द्वितीया प्रारम्भ	**31** शुक्ल द्वितीया 13:59.6 तक तृतीया प्रारम्भ	

माह के शासकीय अवकाश - निरंक

माह के ऐच्छिक अवकाश - 01 नववर्ष दिवस, 06 महर्षि गुरू गोकुलदास जी महाराज का जन्म दिवस/ गुरू गोविंद सिंह जी का जन्म दिवस, 14 मकर संक्रान्ति/पोंगल, 21 हेमू कालाणी का शहीदी दिवस

फरवरी

काल मापन की इकाइयां

अमूर्त काल एवं मूर्त काल

कलनात्मक अर्थात् जाने जा सकने वाला काल दो प्रकार का होता है :- 1. स्थूल 2. सूक्ष्म स्थूल नापा जा सकता है इसलिए इसे मूर्त काल कहते हैं और सूक्ष्म नापा नहीं जा सकता इसलिए अमूर्त कहलाता है।

अमूर्त काल - आर्यभट्ट ने कहा है - **"प्राणेनैति कला भूः"**

एक प्राण 4 सेकण्ड के बराबर होता है। इतने समय में पृथ्वी एक कला घूमती है। एक अहोरात्र में एक व्यक्ति 21600 बार श्वास, प्रश्वास लेता है और पृथ्वी भी 21600 कला अर्थात् 360 अंश घूम जाती है। यह मान आज भी सही है। यह काल की मौलिक इकाई है। अत्यन्त सूक्ष्म गणना के लिए निम्नांकित इकाइयों का प्रयोग किया जाता था जिसे अमूर्तकाल कहा गया।

1 प्राण = 60 लिक्षा या 4 सेकण्ड
1 लिक्षा = 60 लव
1 लव = 60 रेणु
1 रेणु = 60 त्रुटि

1 लिक्षा = $\frac{1}{60}$ प्राण या $\frac{1}{15}$ सेकण्ड
1 लव = $\frac{1}{15} \times \frac{1}{60} = \frac{1}{900}$ सेकण्ड
1 रेणु = $\frac{1}{900} \times \frac{1}{60} = \frac{1}{54,000}$ सेकण्ड
1 त्रुटि = $\frac{1}{54,000} \times \frac{1}{60} = \frac{1}{32,40,000}$ सेकण्ड

भारतीय काल गणना की यह इकाई माइक्रो सेकण्ड से भी छोटी है। (एक माइक्रो से. = 10^{-6} से.)

मूर्त काल -

प्राचीन ग्रन्थों में काल की सूक्ष्मतम गणना की गई है। भास्कराचार्य जी ने त्रुटि की कल्पना इस प्रकार की है। जितने समय में एक पलक गिरती है उसको निमेष कहते हैं। निमेष के तीसरे भाग को तत्पर तथा तत्पर के सौवें भाग को त्रुटि कहते हैं।

18 निमेष = 1 काष्ठा
30 काष्ठा = 1 कला
30 कला = 1 घटिका या घटी

02 घटिका = 1 मुहूर्त
30 मुहूर्त = 1 दिन
01 नाक्षत्र दिन = 30 x 2 x 30 x 30 x 18 निमेष = 972000 निमेष

इसी गणना पर आधारित 30 मुहूर्त में समय को बताने वाली विश्व की प्रथम 'विक्रम वैदिक घड़ी' वेधशाला परिसर में लगाई गई है। स्वस्थ्य मनुष्य जितने समय में सहज ही हवा भीतर खींचता है व बाहर निकालता है उस समय को प्राण कहते हैं। इसे असु भी कहते हैं। एक गुरु या दीर्घ अक्षर के उच्चारण में लगे समय को एक विपल कहते हैं। 10 गुरु अक्षर के उच्चारण में लगने वाला समय एक प्राण होता है।

1 प्राण = 4 सेकण्ड
6 प्राण = 1 विनाड़ी या पल (24 सेकण्ड, 2½ पल = 01 मिनट)
60 विनाड़ी या पल = 1 नाड़ी या घटी (24 मिनट, 2½ घटी = 01 घण्टा)
60 नाड़ी या घटी = 1 नाक्षत्र अहोरात्र (एक दिन-रात का जोड़ा)

30 नाक्षत्र अहोरात्र = 1 नाक्षत्र मास
2 मास = 1 ऋतु
3 ऋतु या 6 मास = 1 अयन
2 अयन = 1 वर्ष या सम्वत्सर

(सूर्य सिद्धांत-मध्यमाधिकार श्लोक 11-13)
यह कालगणना मूर्तकाल के अन्तर्गत आती है। वर्ष से बड़ी इकाइयों का वर्णन अगस्त माह में किया गया है।

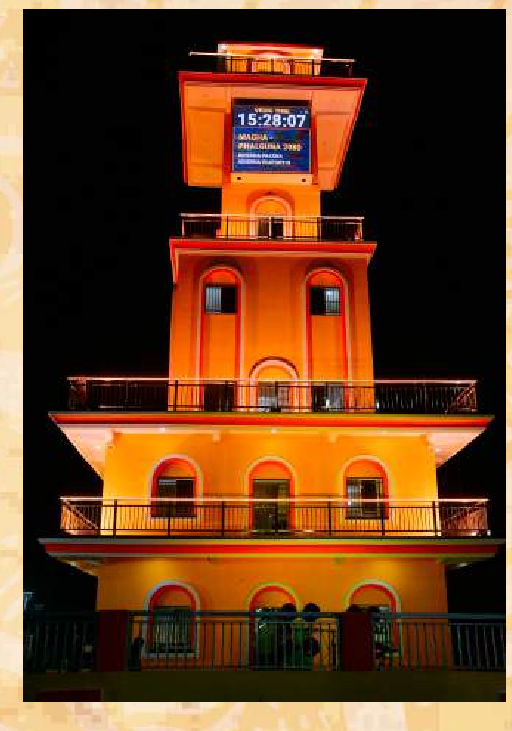

माघ - फ़ाल्गुन **- FEBRUARY -** Magh – Falgun

माह की खगोलीय घटनाएँ

1 फरवरी – चन्द्रमा - शुक्र युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे ।

9 फरवरी – चन्द्रमा - मंगल युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे ।

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
						1 माघ शुक्ल तृतीया 11:38.8 तक चतुर्थी प्रारम्भ
2 माघ शुक्ल चतुर्थी 09:15.0 तक पंचमी प्रारम्भ	**3** शुक्ल पंचमी 06:53.3 तक षष्ठी प्रारम्भ	**4** शुक्ल षष्ठी 04:37.7 तक सप्तमी प्रारम्भ	**5** शुक्ल सप्तमी 02:31.3 तक अष्टमी प्रारम्भ	**6** शुक्ल अष्ठमी 00:36.1 तक नवमी प्रारम्भ नवमी 22:54.0 तक दशमी प्रारम्भ	**7** शुक्ल दशमी 21:26.7 तक एकादशी प्रारम्भ	**8** शुक्ल एकादशी 20:16.4 तक द्वादशी प्रारम्भ
9 माघ शुक्ल द्वादशी 19:25.8 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**10** शुक्ल त्रयोदशी 18:57.8 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**11** शुक्ल चतुर्दशी18:56.0 तक पूर्णिमा प्रारम्भ	**12** माघ शुक्ल पूर्णिमा 19:23.4 तक फाल्गुन कृष्ण प्रथमा प्रारम्भ	**13** फाल्गुन कृष्ण प्रथमा 20:22.3 तक द्वितीया प्रारम्भ	**14** कृष्ण द्वितीया 21:52.9 तक तृतीया प्रारम्भ	**15** कृष्ण तृतीया 23:52.9 तक चतुर्थी प्रारम्भ
16 फाल्गुन कृष्ण चतुर्थी पूर्ण दिवस	**17** कृष्ण चतुर्थी 02:16.4 तक पंचमी प्रारम्भ	**18** कृष्ण पंचमी 04:53.9 तक षष्ठी प्रारम्भ	**19** कृष्ण षष्ठी 07:32.7 तक सप्तमी प्रारम्भ	**20** कृष्ण सप्तमी 09:58.7 तक अष्टमी प्रारम्भ	**21** कृष्ण अष्टमी 11:58.1 तक नवमी प्रारम्भ	**22** कृष्ण नवमी 13:19.7 तक दशमी प्रारम्भ
23 फाल्गुन कृष्ण दशमी 13:56.3 तक एकादशी प्रारम्भ	**24** कृष्ण एकादशी 13:45.2 तक द्वादशी प्रारम्भ	**25** कृष्ण द्वादशी 12:47.9 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**26** कृष्ण त्रयोदशी 11:08.8 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**27** फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी 08:55.1 तक अमावस्या प्रारम्भ	**28** फाल्गुन कृष्ण अमावस्या 06:14.8 तक फाल्गुन प्रथमा प्रारम्भ	

माह के शासकीय अवकाश - 12 संत रविदास जयन्ती (कोषागारों एवं उप-कोषागारों के लिए यह अवकाश नहीं), 26 महाशिवरात्रि।

माह के ऐच्छिक अवकाश - 03 बसन्त पंचमी, 04 देवनारायण जयन्ती/ नर्मदा जयन्ती, 11 स्वामी रामचरण जी महाराज का जन्म दिवस, 14 शब-ए-बारात , 19 छत्रपति शिवाजी जयन्ती, 20 शबरी जयन्ती, 26 एकलव्य जयन्ती ।

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, मध्यप्रदेश

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन का प्रमाणित कैलेण्डर

मार्च

हिंदी तिथियों का वैज्ञानिक आधार

चन्द्रमा का पृथ्वी के चारों ओर घूमना कालगणना की दृष्टि से अत्यन्त महत्वपूर्ण है। चन्द्रमा का नक्षत्र मण्डल चक्र (एक नक्षत्र से पुनः उसी नक्षत्र तक पहुंचाना) 27 ⅓ दिन तथा एक अमावस्या से द्वितीय अमावस्या या एक पूर्णिमा से द्वितीय पूर्णिमा चक्र 29 ⅓ दिन का होता है।

चन्द्रमा अत्यन्त तीव्र गति से लगभग 30 दिन में पृथ्वी की एक परिक्रमा पूरी करता है। इस प्रकार ($360 \div 30 = 12°$) चन्द्रमा एक दिन में लगभग 1 नक्षत्र (13 अंश, 20 कला) गति करता है।

तिथि - भारतीय कालगणना के अनुसार -

चन्द्र रेखांक'को'सूर्य रेखांक'से 12 अंश ऊपर जाने के लिए जो समय लगता है, वह तिथि कहलाती है।

अमावस्या के दिन सूर्य और चन्द्र का भोगांश बराबर होता है। इन दोनों ग्रहों के भोगांश में अन्तर का बढना ही तिथि को जन्म देता है।

चन्द्रमा दीर्घवृत्ताकार कक्षा में पृथ्वी की परिक्रमा करता है जिससे उसकी दैनिक गति एक समान न होकर एक दिन में 11 अंश से लेकर 15 ½ अंश तक होती है। चन्द्रमा की 11 अंश गति की स्थिति में तिथि 24 घण्टे से बड़ी होती है तथा 15 ½ अंश गति की स्थिति में तिथि 24 घण्टे से छोटी होती है। इस प्रकार एक तिथि चन्द्रमा के 12 अंश चलन पर आधारित होने के कारण 24 घण्टे से बड़ी या छोटी हो जाती है।

तिथि क्षय - हमारी भारतीय संस्कृति में सामान्यतः सूर्य उदय के समय जो तिथि होती है पूरे दिन उसी तिथि को माना जाता है। कभी कभी ऐसा होता है कि सूर्य उदय के कुछ ही समय तक एक तिथि रहती है तथा फिर दूसरी तिथि प्रारम्भ हो जाती है यह दूसरी तिथि अगले सूर्य उदय के पूर्व समाप्त होने पर तिथि क्षय माना जाता है।

जैसे- दिनांक 27-02-25 को उज्जैन में सूर्य उदय प्रातः 06:51 बजे पर है तथा प्रातः 08:55:1 तक चतुर्दशी तिथि है उसके बाद अमावस्या तिथि प्रारम्भ हो गयी। परन्तु दिनांक 28-02-25 को सूर्य उदय प्रातः 06:50 के पूर्व ही अमावस्या तिथि प्रात: 6:14:08 बजे पर समाप्त हो गयी तथा प्रथमा तिथि प्रारम्भ हो गयी अर्थात् दिनांक 28-02-25 का सूर्योदय प्रथमा तिथि में हुआ। इस स्थिति में सामान्यतः अमावस्या तिथि क्षय होगी तथा दिनांक 28-02-25 की तिथि प्रथमा मानी जाएेगी।

अधिक तिथि -

इसी प्रकार कभी - कभी ऐसा होता है कि सूर्य उदय के कुछ ही समय पहले एक तिथि प्रारम्भ हो रही है तथा अगले सूर्य उदय के कुछ समय बाद वह तिथि समाप्त हो रही है अर्थात् दो सूर्योदय एक ही तिथि में हो रहे हैं। इस स्थिति में एक ही तिथि दो दिन मानी जाती है जिसे अधिक तिथि कहते हैं ।

दिनांक	तिथि	समय	उज्जैन में सूर्योदय
13-04-25	प्रथमा प्रारम्भ	प्रात: 05:52:2	06:09
14-04-25	प्रथमा समाप्त	प्रात: 08:25:05	06:08

उपरोक्त से स्पष्ट है कि दिनांक 13 एवं 14 अप्रैल 2025 को दोनों दिन प्रथमा तिथि है । क्योंकि दोनों दिन सूर्योदय प्रथमा तिथि में हो रहा है।
किस दिन कौन सी तिथि को ग्रहण करना है यह शास्त्रीय मान्यता के अनुसार निर्धारित होता है।

पक्ष -

एक माह में तीस तिथियां होतीं हैं, ये तिथियां 15-15 दिन के दो पक्षों में विभाजित होतीं हैं – शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष।
शुक्ल पक्ष में 1-14 और पूर्णिमा, कृष्ण पक्ष में 1-14 और अमावस्या

तिथियों के नाम - पूर्णिमा (पूरनमासी), प्रतिपदा (पड़वा), द्वितीया (दूज), तृतीया (तीज), चतुर्थी (चौथ), पंचमी (पंचमी), षष्ठी (छठ), सप्तमी (सातम), अष्टमी (आठम), नवमी (नौमी), दशमी (दसम), एकादशी (ग्यारस), द्वादशी (बारस), त्रयोदशी (तेरस), चतुर्दशी (चौदस) और अमावस्या (अमावस) ।

- माह का अंत दो प्रकार से प्रचलन में है। कुछ स्थानों पर पूर्णिमा से माह का अंत करते हैं और कुछ स्थानों पर अमावस्या से।
- पूर्णिमा से अंत होने वाले माह पूर्णिमांत कहलाते हैं और अमावस्या से अंत होने वाले माह अमावस्यांत कहलाते हैं।

फ़ाल्गुन - चैत्र | **- MARCH -** | Phalguna - Chaitra

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
30 चैत्र शुक्ल प्रथमा 12:49.8 तक द्वितीया प्रारम्भ कलियुगाब्द - ५१२६ विक्रम संवत्- २०८२ प्रारम्भ	**31** शुक्ल द्वितीया 09:11.6 तक तृतीया प्रारम्भ	माह की खगोलीय घटनाएँ	**9 मार्च - चन्द्रमा - मंगल युति** । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे। **14 मार्च - पूर्ण चन्द्र ग्रहण** । भारत में दृश्य नहीं होगा। ग्रहण का प्रारम्भ भारतीय मानक समय के अनुसार प्रात: 10:39:09 बजे पर होगा,मध्य की स्थित दोपहर 12:29:09 पर एवं मोक्ष दोपहर 14:18:02 बजे पर होगा। **20 मार्च -** सूर्य विषुवत रेखा पर लम्बवत होने के कारण दिन व रात बराबर (12-12 घण्टे के) होंगे।		**21 मार्च - चन्द्रमा - शुक्र युति** । सांय सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे। **29 मार्च - आंशिक सूर्य ग्रहण -** भारत में दृश्य नहीं होगा। ग्रहण का प्रारम्भ भारतीय मानक समय के अनुसार दोपहर 14:20:08 बजे पर होगा,मध्य की स्थित दोपहर 16:17:04 पर एवं मोक्ष सायं 18:13:06 पर होगा ।	**1** फ़ाल्गुन शुक्ल प्रथमा 03:16.7 तक द्वितीया प्रारम्भ
2 फ़ाल्गुन शुक्ल द्वितीया 00:09.8 तक तृतीया प्रारम्भ 21:02:05 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**3** शुक्ल चतुर्थी 18:02.7 तक पंचमी प्रारम्भ	**4** शुक्ल पंचम 15:17.2 तक षष्ठी प्रारम्भ	**5** शुक्ल षष्ठी 12:51.9 तक सप्तमी प्रारम्भ	**6** शुक्ल सप्तमी 10:51.4 तक अष्टमी प्रारम्भ	**7** शुक्ल अष्टमी 09:19.1 तक नवमी प्रारम्भ	**8** शुक्ल नवमी 08:17.0 तक दशमी प्रारम्भ
9 फ़ाल्गुन शुक्ल दशमी 07:45.7 तक एकादशी प्रारम्भ	**10** शुक्ल एकादशी 07:45.2 तक द्वादशी प्रारम्भ	**11** शुक्ल द्वादशी 08:14.5 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**12** शुक्ल त्रयोदशी 09:12.2 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**13** फ़ाल्गुन शुक्ल चतुर्दशी 10:36.4 तक पूर्णिमा प्रारम्भ	**14** फ़ाल्गुन शुक्ल पूर्णिमा 12:24.6 तक चैत्र कृष्ण प्रथमा प्रारम्भ	**15** चैत्र कृष्ण प्रथमा 14:33.7 तक द्वितीया प्रारम्भ
16 चैत्र कृष्ण द्वितीया 16:58.8 तक तृतीया प्रारम्भ	**17** कृष्ण तृतीया 19:33.6 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**18** कृष्ण चतुर्थी 22:09.8 तक पंचमी प्रारम्भ	**19** कृष्ण पंचमी पूर्ण दिवस	**20** कृष्ण पंचमी 00:37.5 तक षष्ठी प्रारम्भ	**21** कृष्ण षष्ठी 02:45.9 तक सप्तमी प्रारम्भ	**22** कृष्ण सप्तमी 04:24.3 तक अष्टमी प्रारम्भ
23 चैत्र कृष्ण अष्टमी 05:23.9 तक नवमी प्रारम्भ	**24** कृष्ण नवमी 05:38.6 तक दशमी प्रारम्भ	**25** कृष्ण दशमी 05:05.7 तक एकादशी प्रारम्भ	**26** कृष्ण एकादशी 03:45.9 तक द्वादशी प्रारम्भ	**27** कृष्ण द्वादशी 01:43.2 तक त्रयोदशी प्रारम्भ त्रयोदशी 23:03.8 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**28** चैत्र कृष्ण चतुर्दशी 19:55.6 तक अमावस्या प्रारम्भ	**29** कृष्ण अमावस्या 16:27.8 तक चैत्र शुक्ल प्रथमा प्रारम्भ

माह के शासकीय अवकाश - 14 होली, 31 ईद-उल-फित्र।

माह के ऐच्छिक अवकाश - 13 होली (होलिका दहन), 18 टोडरमल जयंती, 20 वीरांगना अवंतिबाई का बलिदान दिवस, 25 भक्त माता कर्मा जयंती, 28 जमात-उल- विदा, 31 भगवान मीनेष जयंती

अप्रैल

सप्ताह की अवधारणा

सप्ताह के दिनों के नाम के निर्धारण हेतु स्पष्ट व्यवस्था की गई है। भूकेन्द्रित परिकल्पना के अन्तर्गत पृथ्वी के सबसे नजदीक चन्द्रमा से प्रारम्भ करते हुए क्रमानुसार बुध, शुक्र, सूर्य, मंगल, बृहस्पति व शनि का क्रम निर्धारित किया गया। जिसमें दिन के 24 घण्टे में प्रत्येक ग्रह एक-एक का घण्टे अधिपति होता है। इस प्रकार सातों ग्रहों के एक-एक घण्टे के अधिपति का क्रम चलता रहता है। पृथ्वी का एक चक्र (24 घण्टे) पूरा होने पर अगले दिन के पहले घण्टे के अधिपति ग्रह के नाम पर दिन का नाम निर्धारित होता है। सृष्टि का प्रारम्भ सूर्य से हुआ है अत: प्रथम दिन रविवार मानकर क्रमानुसार शेष वारों के नाम रखे गए हैं।

हम देखते हैं कि रविवार से प्रारम्भ करके क्रमानुसार एक-एक घण्टे के अधिपति ग्रहों को लेते हुए आगे बढने पर 24 घण्टे पश्चात पहले घण्टे का अधिपति चन्द्र ग्रह है अत: चन्द्र के नाम पर रविवार के बाद अगले वार का नाम सोमवार रखा गया है। इसी प्रकार सोमवार से क्रमानुसार एक-एक घण्टे के अधिपति ग्रहों को लेते हुए आगे बढें तो 24 घण्टे पश्चात पहले घण्टे का अधिपति मंगल ग्रह है अत: मंगल के नाम पर सोमवार के बाद अगले वार का नाम मंगलवार रखा गया है। इसी क्रम को आगे बढाते हुए शेष वारों के नाम का निर्धारण किया गया है।

चन्द्र	बुध	शुक्र	सूर्य	मंगल	बृहस्पति	शनि
4	3	2	1 रविवार			
11	10	9	8	7	6	5
18	17	16	15	14	13	12
1 सोमवार	24	23	22	21	20	19
8	7	6	5	4	3	2
15	14	13	12	11	10	9
22	21	20	19	18	17	16
5	4	3	2	1 मंगलवार	24	23
12	11	10	9	8	7	6
19	18	17	16	15	14	13
2	1 बुधवार	24	23	22	21	20

चन्द्र	बुध	शुक्र	सूर्य	मंगल	बृहस्पति	शनि
9	8	7	6	5	4	3
16	15	14	13	12	11	10
23	22	21	20	19	18	17
6	5	4	3	2	1 बृहस्पति	24
13	12	11	10	9	8	7
20	19	18	17	16	15	14
3	2	1 शुक्रवार	24	23	22	21
10	9	8	7	6	5	4
17	16	15	14	13	12	11
24	23	22	21	20	19	18
						1 शनिवार

चैत्र – वैशाख — -APRIL- — Chaitra - Vaisakha

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
		1 **चैत्र शुक्ल** तृतीया 05:42.8 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**	**2** **शुक्ल** चतुर्थी 02:32.9 तक **पंचमी प्रारम्भ** पंचमी 23:50.3 तक **षष्ठी प्रारम्भ**	**3** **शुक्ल** षष्ठी 21:42.0 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	**4** **शुक्ल** सप्तमी 20:13.3 तक **अष्टमी प्रारम्भ**	**5** **शुक्ल** अष्टमी 19:27.0 तक **नवमी प्रारम्भ**
6 **शुक्ल** नवमी 19:23.6 तक **दशमी प्रारम्भ**	**7** **शुक्ल** दशमी 20:00.6 तक **एकादशी प्रारम्भ**	**8** **शुक्ल** एकादशी 21:13.5 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	**9** **शुक्ल** द्वादशी 22:56.0 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**	**10** **शुक्ल** **त्रयोदशी पूर्ण दिवस**	**11** **शुक्ल** त्रयोदशी 01:01.2 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ**	**12** **शुक्ल** चतुर्दशी 03:22.1 तक **चैत्र पूर्णिमा प्रारम्भ**
13 **चैत्र शुक्ल** पूर्णिमा 05:52.2 तक **वैशाख कृष्ण** **प्रथमा प्रारम्भ**	**14** **वैशाख कृष्ण** प्रथमा 08:25.5 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	**15** **कृष्ण** द्वितीया 10:56.0 तक **तृतीया प्रारम्भ**	**16** **कृष्ण** तृतीया 13:17.6 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**	**17** **कृष्ण** चतुर्थी 15:23.9 तक **पंचमी प्रारम्भ**	**18** **कृष्ण** पंचमी 17:07.9 तक **षष्ठी प्रारम्भ**	**19** **कृष्ण** षष्ठी 18:22.5 तक **सप्तमी प्रारम्भ**
20 **वैशाख कृष्ण** सप्तमी 19:01.2 तक **अष्टमी प्रारम्भ**	**21** **कृष्ण** अष्ठमी 18:59.1 तक **नवमी प्रारम्भ**	**22** **कृष्ण** नवमी 18:13.4 तक **दशमी प्रारम्भ**	**23** **कृष्ण** दशमी 16:43.7 तक **एकादशी प्रारम्भ**	**24** **कृष्ण** एकादशी 14:32.6 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	**25** **कृष्ण** द्वादशी 11:45.1 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**	**26** **कृष्ण** त्रयोदशी 08:28.1 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ**
27 **वैशाख कृष्ण** चतुर्दशी 04:50.2 तक **अमावस्या प्रारम्भ**	**28** **कृष्ण** अमावस्या 01:01.1 तक **वैशाख शुक्ल** **प्रथमा प्रारम्भ** प्रथमा 21:11.4 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	**29** **वैशाख शुक्ल** द्वितीया 17:31.7 तक **तृतीया प्रारम्भ**	**30** **शुक्ल** तृतीया 14:12.6 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**			

माह की खगोलीय घटनाएँ

2 अप्रैल - चन्द्रमा - बृहस्पति युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

5 अप्रैल - चन्द्रमा - मंगल युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

25 अप्रैल – चन्द्रमा - शुक्र युति । प्रात: सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

30 अप्रैल - चन्द्रमा - बृहस्पति युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

माह के शासकीय अवकाश - 1 बैंक की वार्षिक लेखाबंदी (केवल कोषागारों के लिए अवकाश), 10 महावीर जयंती,14 डॉ अम्बेडकर जयंती/ वैशाखी(कोषागारों एवं उप-कोषागारों के लिए यह अवकाश नहीं), 18 पुण्य शुक्रवार (गुड फ्रायडे), 30 परशुराम जयंती(कोषागारों एवं उप-कोषागारों के लिए यह अवकाश नहीं) ।

माह के ऐच्छिक अवकाश - 02 निषादराज जयंती, 11 महात्मा ज्योतिबा फुले जयन्ती/ हाटकेश्वर जयंती, 14 विशु, 24 वल्लभाचार्य जयंती, 25 सेन जयंती, 30 अक्षय तृतीया ।

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, मध्यप्रदेश

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन का प्रमाणित कैलेण्डर

मई

माह की अवधारणा

चंद्रमा द्वारा पृथ्वी की एक परिक्रमा से माह का निर्धारण होता है। चंद्रमा अत्यंत तीव्र गति से दीर्घ वृत्ताकार कक्षा में पृथ्वी की परिक्रमा करता है।

नाक्षत्र मास – चंद्रमा को एक नक्षत्र से प्रारंभ करके पुनः उसी नक्षत्र तक पहुंचने के समय को नाक्षत्र मास कहते हैं। एक नक्षत्र से प्रारंभ करके पुनः उसी नक्षत्र तक पहुंचने में चंद्रमा को 27⅓ दिन का समय लगता है अर्थात् नक्षत्र मंडल चक्र 27⅓ दिन का होता है।

नक्षत्रमण्डल चक्र - 27⅓ दिन (एक नाक्षत्रमास = 27.3217 माध्य सौर दिन)

चान्द्र मास – एक अमावस्या या पूर्णिमा से द्वितीय अमावस्या या पूर्णिमा तक चंद्रमा को 29.53059 दिन का समय लगता है प्रथम अमावस्या या पूर्णिमा से द्वितीय अमावस्या या पूर्णिमा तक के समय को **चान्द्र मास** कहते हैं।

एक चान्द्र मास = 29.53059 माध्य सौर दिन या 29 माध्य सौर दिन 12 घण्टे 44 मिनट

- इस प्रकार एक चंद्र मास, नक्षत्र मास से 2.20889 माध्य सौर दिन बड़ा होता है।
- चन्द्रमा प्रतिदिन औसतरूप से 50½ मिनट देर से उदय होता है। उदय का समय एक समान न होकर 17 मिनट से 1 घण्टे 16 मिनट तक होता है। जो चन्द्रमा की क्रान्ति तथा उस स्थान के अक्षांश पर निर्भर करता है।

माह के नामकरण - तैत्तिरीय संहिता में 12 महीनों के नाम मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नभस् , नभस्य, इष, उर्ज, सहस, सहस्य, तपस् एवं तपस्य आए हैं।

सूर्य-सिद्धान्त का कथन है : -**"नक्षत्र नाम्ना मासास्तु जेया: पर्वांयोगत"**

अर्थात् पूर्णिमा के अंत में चन्द्रमा जिस नक्षत्र में रहता है उसी के नाम पर मासों के नाम हैं।

जैसे- जिस मास में पूर्णिमा पुष्य नक्षत्र में होती है उसे पौष नाम दिया गया है।

दिए गए चित्र में जिन-जिन नक्षत्रों के नाम पर माह के नाम का निर्धारण किया गया है, उन्हें लाल रंग से दर्शाया गया है।

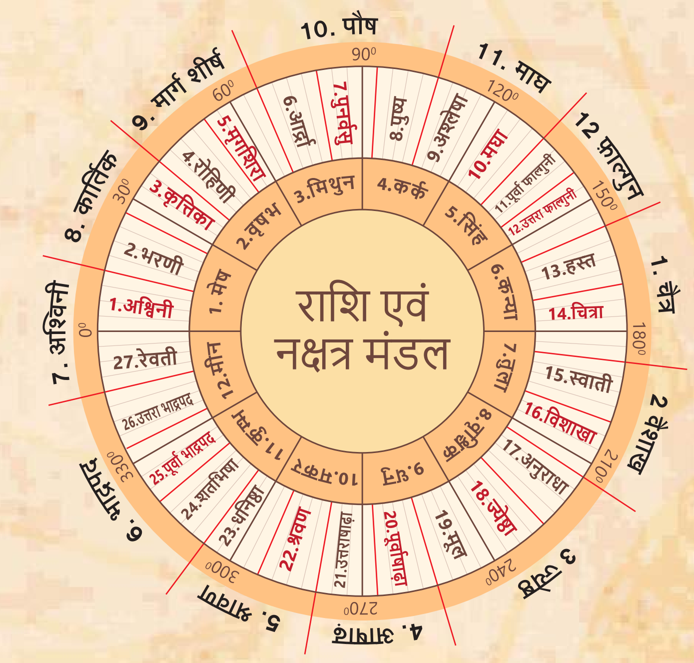

दी गई सारणी में किस-किस नक्षत्र में पूर्णिमा होने पर माह का नाम क्या होगा, उसे प्रदर्शित किया गया है

महीनों के नाम	पूर्णिमा के दिन चन्द्रमा इस नक्षत्र में होता है
चैत्र	चित्रा, स्वाति
वैशाख	विशाखा, अनुराधा
ज्येष्ठ	ज्येष्ठा, मूल
आषाढ़	पूर्वाषाढ़, उत्तराषाढ़
श्रावण	श्रवण, धनिष्ठा, शतभिषा
भाद्रपद	पूर्वभाद्रपद , उत्तरभाद्रपद
आश्विन	रेवती, अश्विनी, भरणी
कार्तिक	कृतिका, रोहिणी
मार्गशीर्ष	मृगशिरा, आर्द्रा
पौष	पुनर्वसु, पुष्य
माघ	अश्लेषा, माघ
फ़ाल्गुन	पूर्व फ़ाल्गुन, उत्तर फ़ाल्गुनी, हस्त

वैशाख – ज्येष्ठ — MAY — Vaisakha - Jaistha

माह की खगोलीय घटनाएँ

4 मई - चन्द्रमा - मंगल युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

22 मई - चन्द्रमा - शनि युति । प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं शनि ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

23 मई - चन्द्रमा - शुक्र युति । प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

28 मई - चन्द्रमा - बृहस्पति युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
				1 वैशाख शुक्ल चतुर्थी 11:24.2 तक पंचमी प्रारम्भ	**2** शुक्ल पंचमी 09:15.2 तक षष्ठी प्रारम्भ	**3** शुक्ल षष्ठी 22:01.6 तक सप्तमी प्रारम्भ
4 वैशाख शुक्ल सप्तमी 07:19.4 तक अष्टमी प्रारम्भ	**5** शुक्ल अष्टमी 07:36.2 तक नवमी प्रारम्भ	**6** शुक्ल नवमी 08:39.0 तक दशमी प्रारम्भ	**7** शुक्ल दशमी 10:20.2 तक एकादशी प्रारम्भ	**8** शुक्ल एकादशी 12:29.7 तक द्वादशी प्रारम्भ	**9** शुक्ल द्वादशी 14:56.6 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**10** शुक्ल त्रयोदशी 17:30.4 तक चतुर्दशी प्रारम्भ
11 वैशाख शुक्ल चतुर्दशी 20:02.4 तक पूर्णिमा प्रारम्भ	**12** वैशाख शुक्ल पूर्णिमा 22:25.9 तक ज्येष्ठ कृष्ण प्रथमा प्रारम्भ	**13** ज्येष्ठ कृष्ण प्रथमा पूर्ण दिवस	**14** कृष्ण प्रथमा 00:36.2 तक द्वितीया प्रारम्भ	**15** कृष्ण द्वितीया 02:29.7 तक तृतीया प्रारम्भ	**16** कृष्ण तृतीया 04:03.4 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**17** कृष्ण चतुर्थी 05:14.1 तक पंचमी प्रारम्भ
18 ज्येष्ठ कृष्ण पंचमी 05:58.2 तक षष्ठी प्रारम्भ	**19** कृष्ण षष्ठी 06:12.1 तक सप्तमी प्रारम्भ	**20** कृष्ण सप्तमी 05:52.2 तक अष्टमी प्रारम्भ	**21** ज्येष्ठ कृष्ण अष्टमी 04:56.0 तक नवमी प्रारम्भ	**22** कृष्ण नवमी 03:22.4 तक दशमी प्रारम्भ	**23** कृष्ण दशमी 01:12.6 तक एकदशी प्रारम्भ एकदशी 22:30.1 तक द्वादशी प्रारम्भ	**24** कृष्ण द्वादशी 19:20.6 तक त्रयोदशी प्रारम्भ
25 ज्येष्ठ कृष्ण त्रयोदशी 15:51.6 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**26** कृष्ण चतुर्दशी 12:12.1 तक अमावस्या प्रारम्भ	**27** ज्येष्ठ शुक्ल अमावस्या 08:32.3 तक ज्येष्ठ शुक्ल प्रथमा प्रारम्भ	**28** ज्येष्ठ शुक्ल प्रथमा 05:02.9 तक द्वितीया प्रारम्भ	**29** शुक्ल द्वितीया 01:55.0 तक तृतीया प्रारम्भ तृतीया 23:18.7 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**30** शुक्ल चतुर्थी 21:23.4 तक पंचमी प्रारम्भ	**31** शुक्ल पंचमी 20:15.9 तक षष्ठी प्रारम्भ

माह के शासकीय अवकाश - 12 बुद्ध पूर्णिमा, 29 महाराणा प्रताप जयन्ती /छत्रसाल जयन्ती (कोषागारों एवं उप-कोषागारों के लिए यह अवकाश नहीं)।

माह के ऐच्छिक अवकाश - 02 शंकराचार्य जयंती(एकात्मता दिवस/दार्शनिक दिवस), 15 केवट जयंती, 31 माँ अहिल्याबाई का जन्म दिवस।

जून

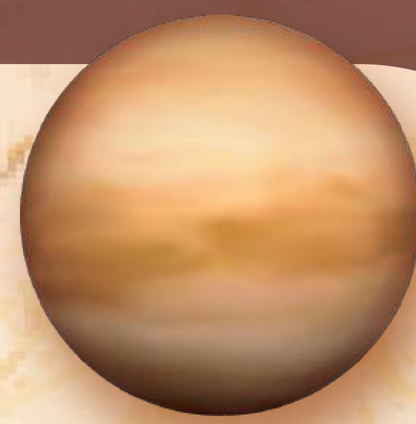

वर्ष की अवधारणा

चंद्रमा द्वारा पृथ्वी की एक परिक्रमा से माह एवं पृथ्वी की सूर्य की एक परिक्रमा से वर्ष का निर्धारण होता है।

- पृथ्वी की गति दो प्रकार की है- घूर्णन एवं परिक्रमण।
- पृथ्वी का अपने अक्ष पर घूमना घूर्णन कहलाता है। सूर्य के चारों ओर एक स्थिर कक्षा में पृथ्वी की गति को परिक्रमण गति कहते हैं।

पृथ्वी का एक दिन - पृथ्वी का अपने अक्ष के सापेक्ष पश्चिम से पूर्व दिशा की ओर लगभग 1670 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से 23 घंटे 56 मिनट 4 सेकंड में एक घूर्णन पूरा करती है।

पृथ्वी का एक दिन = 23 घंटे 56 मिनट 4.09053 सेकंड

सौर वर्ष - अपने अक्ष पर घूमते हुए पृथ्वी सूर्य के चारों ओर लगभग 107000 किलोमीटर प्रति घंटे की गति से दीर्घवृत्ताकार कक्षा में चक्कर लगाती है। सूर्य के चारों ओर एक परिक्रमण में पृथ्वी को 365.2422 मध्य सौर दिन का समय लगता है। इसे **सौर वर्ष** कहते हैं।

एक सौर वर्ष = 365.2422 माध्य सौर दिन या 365 दिन 5 घण्टे 48 मिनट 45.7 सेकंड

चान्द्रवर्ष – 12 पूर्ण चान्द्रमास का चान्द्रवर्ष होता है।

1 चान्द्रवर्ष = 29.53059 दिन × 12 = 354.36708 माध्य सौर दिन या 354 दिन 8 घण्टे 48 मिनट

सौर वर्ष और चान्द्र वर्ष में अन्तर - एक सौर वर्ष में 12.36827 चान्द्रमास होते हैं।

सौर वर्ष और चान्द्र वर्ष में अन्तर = सौर वर्ष - चान्द्र वर्ष
= 365.2422 - 354.36708
= 10.87512 माध्य सौर दिवस

अधिमास-

- इस प्रकार सौरवर्ष, चांद्रवर्ष से 10.87512 माध्य सौर दिवस (लगभग 11 दिन) बड़ा होता है। जो 3 साल में बढ़कर एक माह के बराबर हो जाता है।
- पृथ्वी व चन्द्रमा के भगणों में सामंजस्य बिठाने तथा ऋतुओं से महीनों के अलगाव न हो, को द्रष्टिगत रखते हुए, प्रत्येक तीसरे वर्ष **अधिमास** की कल्पना की गई।
- प्रत्येक 32 मास, 11 दिन, 1 घण्टे, 36 मिनट बाद सौर मास और चांद्रमास की संख्या में एक मास का अन्तर हो जाता है।
- वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद तथा अश्विनी अधिमास हो सकते हैं।
- जिस चांद्रमास में सूर्य संक्रांति नहीं पड़ती है, वही मास **'अधिमास'** कहलाता है।

क्षयमास-

- जिस चांद्रमास में दो सूर्य संक्रांति का समावेश हो जाए। वह मास **'क्षयमास'** कहलाता है।
- क्षयमास केवल कार्तिक, मार्गशीर्ष व पौष मास ही होता है।
- जिस वर्ष में क्षयमास होता है, उसी वर्ष अधिमास भी अवश्य पड़ता है।

ज्येष्ठ - आषाढ़ **- J U N E -** Jaistha - Ashadha

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
1 **ज्येष्ठ शुक्ल** षष्ठी 20:00.1 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	**2** **शुक्ल** सप्तमी 20:35.5 तक **अष्टमी प्रारम्भ**	**3** **शुक्ल** अष्टमी 21:56.9 तक **नवमी प्रारम्भ**	**4** **शुक्ल** नवमी 23:54.7 तक **दशमी प्रारम्भ**	**5** **शुक्ल** **दशमी पूर्ण दिवस**	**6** **शुक्ल** दशमी 02:16.5 तक **एकादशी प्रारम्भ**	**7** **शुक्ल** एकादशी 04:48.5 तक **द्वादशी प्रारम्भ**
8 **ज्येष्ठ शुक्ल** द्वादशी 07:18.4 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**	**9** **शुक्ल** त्रयोदशी 09:36.4 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ**	**10** **शुक्ल** चतुर्दशी 11:36.1 तक **पूर्णिमा प्रारम्भ**	**11** **ज्येष्ठ शुक्ल** पूर्णिमा 13:13.8 तक **आषाढ कृष्ण** **प्रथमा प्रारम्भ**	**12** **आषाढ कृष्ण** प्रथमा 14:28.3 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	**13** **कृष्ण** द्वितीया 15:19.4 तक **तृतीया प्रारम्भ**	**14** **कृष्ण** तृतीया 15:47.3 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**
15 **आषाढ कृष्ण** चतुर्थी 15:51.8 तक **पंचमी प्रारम्भ**	**16** **कृष्ण** पंचमी 15:32.2 तक **षष्ठी प्रारम्भ**	**17** **कृष्ण** षष्ठी 14:47.1 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	**18** **कृष्ण** सप्तमी 13:35.2 तक **अष्टमी प्रारम्भ**	**19** **कृष्ण** अष्टमी 11:56.0 तक **नवमी प्रारम्भ**	**20** **आषाढ कृष्ण** नवमी 09:49.9 तक **दशमी प्रारम्भ**	**21** **कृष्ण** दशमी 07:19.2 तक **एकादशी प्रारम्भ**
22 **आषाढ कृष्ण** एकादशी 04:28.1 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	**23** **कृष्ण** द्वादशी 01:22.5 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ** त्रयोदशी 22:10.2 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ**	**24** **आषाढ कृष्ण** चतुर्दशी 19:00.0 तक **अमावस्या प्रारम्भ**	**25** **आषाढ शुक्ल** अमावस्या 16:01.7 तक **प्रथमा प्रारम्भ**	**26** **शुक्ल** प्रथमा 13:25.1 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	**27** **शुक्ल** द्वितीया 11:19.9 तक **तृतीया प्रारम्भ**	**28** **शुक्ल** तृतीया 09:54.5 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**
29 **आषाढ शुक्ल** चतुर्थी 09:15.5 तक **पंचमी प्रारम्भ**	**30** **शुक्ल** पंचमी 09:24.4 तक **षष्टी प्रारम्भ**					

माह की खगोलीय घटनाएँ

1 जून – चन्द्रमा - मंगल युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

19 जून - चन्द्रमा - शनि युति । प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं शनि ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

21 जून - सूर्य कर्क रेखा पर लम्बवत होने के कारण उत्तरी गोलार्ध में दिन सबसे बडा तथा रात सबसे छोटी होगी । इस दिन स्थानीय समय 12 बजे (उज्जैन के लिए 12 :28 बजे) कर्करेखा के नजदीक स्थित समस्त स्थानों पर परछाई कुछ समय के लिए शून्य हो जायेगी।

22 जून - चन्द्रमा - शुक्र युति । प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

30 जून – चन्द्रमा - मंगल युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

माह के शासकीय अवकाश - 07 ईदुज्जुहा ।

माह के ऐच्छिक अवकाश - 04 महेश जयंती, 06 ईद--उल अदहा (ईदुज्जुहा के ठीक पूर्व का दिवस), 09 बड़ा महादेव पूजन, 11 कबीर जयंती, 14 गदीर -ए-खुम, 24 वीरागंना दुर्गावती का बलिदान दिवस, 27 रथयात्रा।

कलियुगाब्द ५१२६
विक्रम संवत् २०८२
वर्ष २०२५

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, मध्यप्रदेश

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन का प्रमाणित कैलेण्डर

Kaliyugabd 5126
Vikram Samvat 2082
Varsha 2025

जुलाई

देवताओं एवं असुरों के दिन-रात

पृथ्वी पर किसी स्थान की स्थिति की जानकारी प्राप्त करने हेतु पृथ्वी पर अक्षांश एवं देशान्तर रेखाओं की कल्पना की गई है। यदि हम अक्षांश रेखाओं की बात करें तो पृथ्वी के ठीक मध्य से गुज़रने वाली रेखा को **भूमध्य रेखा या विषुवत रेखा या शून्य अक्षांश रेखा** कहते हैं। विषुवत रेखा पृथ्वी को उत्तरी तथा दक्षिणी गोलार्ध में विभाजित करती है। उत्तरी गोलार्ध में विषुवत रेखा से 23 ½ अंश पर **कर्क रेखा** स्थित है एवं दक्षिणी गोलार्ध में विषुवत रेखा से 23 ½ अंश पर **मकर रेखा** स्थित है। सूर्य हमको कर्क रेखा से मकर रेखा के बीच गति करता हुआ दृष्टिगोचर होता है। पृथ्वी के **उत्तरी ध्रुव पर देवताओं** के रहने का तथा **दक्षिणी ध्रुव पर राक्षसों** के रहने का स्थान बताया गया है।

सूर्य की उत्तरी गोलार्ध में स्थिति- 21 मार्च को सूर्य विषुवत रेखा पर लंबवत रहता है। जिससे उत्तरी एवं दक्षिणी दोनों गोलार्ध में दिन और रात बराबर-बराबर अर्थात् 12-12 घण्टे के होते हैं। इस दिन सूर्य किसी गोलार्ध में नहीं रहता है। 21 मार्च के बाद सूर्य का उत्तरी गोलार्ध में प्रवेश दृष्टिगोचर होता है और अगले 6 महीने 22 सितंबर तक उत्तरी गोलार्ध में ही रहता है। जिससे उत्तरी गोलार्ध में दिन बड़े तथा रात छोटी होती है। इस समय सूर्य उत्तरी गोलार्ध में होने के कारण उत्तरी ध्रुव पर (सुमेरू पर्वत पर) 6 महीने तक सदा दिखाई देता है और दक्षिणी ध्रुव पर इस समय दिखाई नहीं देता है। इसलिए **इस छःमाही को देवताओं का दिन तथा राक्षसों की रात** कहते हैं।

सूर्य की दक्षिणी गोलार्ध में स्थिति- 23 सितंबर को सूर्य विषुवत रेखा पर लंबवत रहता है। जिससे उत्तरी एवं दक्षिणी दोनों गोलार्ध में दिन और रात बराबर-बराबर अर्थात् 12-12 घण्टे के होते हैं। इस दिन सूर्य किसी गोलार्ध में नहीं रहता है। 23 सितंबर के बाद सूर्य का दक्षिणी गोलार्ध में प्रवेश दृष्टिगोचर होता है और अगले 6 महीने 20 मार्च तक दक्षिणी गोलार्ध में ही रहता है। जिससे दक्षिणी गोलार्ध में दिन बड़े तथा रात छोटी होती है। इस समय सूर्य दक्षिणी गोलार्ध में होने के कारण दक्षिणी ध्रुव पर 6 महीने तक सदा दिखाई देता है और उत्तरी ध्रुव पर इस समय दिखाई नहीं देता है। इसलिए **इस छःमाही को राक्षसों का दिन तथा देवताओं की रात** कहते हैं। इसलिए **हमारे 12 महीने देवताओं तथा राक्षसों के एक अहोरात्र (दिन- रात) के समान** होते हैं।

(सूर्य सिद्धांत-मध्यमाधिकार श्लोक 14)

आषाढ़ — श्रावण **- JULY -** Ashadha - Sravana

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
माह की खगोलीय घटनाएँ **16 जुलाई - चन्द्रमा - शनि युति।** प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं शनि ग्रह एक साथ दिखाई देंगे। **21 जुलाई - चन्द्रमा - शुक्र युति।** प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।		**1** आषाढ शुक्ल षष्ठी 10:21.1 तक सप्तमी प्रारम्भ	**2** शुक्ल सप्तमी 11:59.0 तक अष्टमी प्रारम्भ	**3** शुक्ल अष्टमी 14:07.3 तक नवमी प्रारम्भ	**4** शुक्ल नवमी 16:32.3 तक दशमी प्रारम्भ	**5** शुक्ल दशमी 18:59.4 तक एकादशी प्रारम्भ
6 आषाढ शुक्ल एकादशी 21:15.5 तक द्वादशी प्रारम्भ	**7** शुक्ल द्वादशी 23:10.7 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**8** शुक्ल त्रयोदशी पूर्ण दिवस	**9** शुक्ल त्रयोदशी 00:38.8 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**10** आषाढ शुक्ल चतुर्दशी 01:37.4 तक पूर्णिमा प्रारम्भ	**11** श्रावण कृष्ण पूर्णिमा 02:06.8 तक श्रावण कृष्ण प्रथमा प्रारम्भ	**12** कृष्ण प्रथमा 02:09.0 तक द्वितीया प्रारम्भ
13 श्रावण कृष्ण द्वितीया 01:46.8 तक तृतीया प्रारम्भ	**14** कृष्ण तृतीया 01:03.2 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**15** कृष्ण चतुर्थी 00:00.2 तक पंचमी प्रारम्भ पंचमी 22:39.6 तक षष्ठी प्रारम्भ	**16** कृष्ण षष्ठी 21:02.4 तक सप्तमी प्रारम्भ	**17** कृष्ण सप्तमी 19:09.5 तक अष्टमी प्रारम्भ	**18** कृष्ण अष्टमी 17:02.3 तक नवमी प्रारम्भ	**19** कृष्ण नवमी 14:42.5तक दशमी प्रारम्भ
20 श्रावण कृष्ण दशमी 12:13.5तक एकादशी प्रारम्भ	**21** श्रावण कृष्ण एकादशी 09:39.4 तक द्वादशी प्रारम्भ	**22** कृष्ण द्वादशी 07:06.6 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**23** कृष्ण त्रयोदशी 04:40.1 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**24** श्रावण कृष्ण चतुर्दशी 02:29.3 तक अमावस्या प्रारम्भ	**25** श्रावण शुक्ल अमावस्या 00:41.2 तक प्रथमा प्रारम्भ प्रथमा 23:23.5 तक द्वितीया प्रारम्भ	**26** शुक्ल द्वितीया 22:42.5 तक तृतीया प्रारम्भ
27 श्रावण शुक्ल तृतीया 22:42.6 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**28** शुक्ल चतुर्थी 23:25.0 तक पंचमी प्रारम्भ	**29** शुक्ल पंचमी पूर्ण दिवस	**30** शुक्ल पंचमी 00:47.1 तक षष्ठी प्रारम्भ	**31** शुक्ल षष्ठी 02:42.1 तक सप्तमी प्रारम्भ	**माह की खगोलीय घटनाएँ** **28 जुलाई - चन्द्रमा - मंगल युति।** सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।	

माह के शासकीय अवकाश - निरंक

माह के ऐच्छिक अवकाश - 05 योम-ए-अशुरा, 10 गुरू पूर्णिमा, 29 नागपंचमी, 31 गोस्वामी तुलसीदास जयन्ती।

अगस्त

युग

ग्रहों की गति की गणना के सन्दर्भ में युगों की कल्पना की गयी। 4,32,000 वर्ष में ग्रह अपने भोग और शर को छोड़कर एक सीध में आते हैं, इस युतिकाल को कलियुग कहा गया है।

कलियुग	-1200 दिव्यवर्ष	या 1200 x 360	= 4,32,000 सौरवर्ष
द्वापर युग	-2400 दिव्यवर्ष	या 4,32,000 x 2	= 8,64,000 सौरवर्ष
त्रेतायुग	-3600 दिव्यवर्ष	या 4,32,000 x 3	= 12,96,000 सौरवर्ष
सतयुग	-4800 दिव्यवर्ष	या 4,32,000 x 4	= 17,28,000 सौरवर्ष
महायुग या 1 चतुर्युगी	- 4 युग -12000 दिव्यवर्ष	या 4,32,000 x 10	= 43,20,000 सौरवर्ष

(सूर्य सिद्धांत-मध्यमाधिकार श्लोक 15-17)

मन्वन्तर :- हमारा सौर परिवार आकाश गंगा के केन्द्र से लगभग 30 हजार प्रकाशवर्ष दूर है और इसे 220 कि.मी./सेकण्ड की गति से आकाश गंगा के केन्द्र की एक परिक्रमा पूर्ण करने लगभग 25 करोड़ वर्ष लगते हैं। हमारी प्राचीन गणना में इसे मन्वन्तर कहा गया है।

1 मन्वतर - 71 चतुर्युगी - 71 x 43,20,000 = 30,67,20,000 सौरवर्ष

एक से दूसरे मन्वन्तर के बीच एक सतयुग के बराबर संध्यांश होता है । अतः मन्वन्तर 30,84,48,000 वर्ष का होता है।

14 मन्वंतर के नाम :-

1. स्वायम्भुव
2. स्वारोचिष
3. औषमि (औत्तमि)
4. तामस
5. रैवत
6. चाक्षुष
7. **वैवस्वत**
8. सावर्णिक
9. दक्षसावर्णिक
10. ब्रह्मसावर्णिक
11. धर्मसावर्णिक
12. रूद्रसावर्णिक
13. देवसावर्णिक
14. इंद्रसावर्णिक

श्रावण – भाद्र **-AUGUST-** Sravan - Bhadra

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
31 भाद्रपद शुक्ल अष्टमी पूर्ण दिवस	माह की खगोलीय घटनाएँ				**1** श्रावण शुक्ल सप्तमी 04:58.9तक अष्टमी प्रारम्भ	**2** शुक्ल अष्टमी 07:23.9 तक नवमी प्रारम्भ
3 श्रावण शुक्ल नवमी 09:42.6 तक दशमी प्रारम्भ	**4** शुक्ल दशमी 11:42.2 तक एकादशी प्रारम्भ	**5** शुक्ल एकादशी 13:12.8 तक द्वादशी प्रारम्भ	**6** शुक्ल द्वादशी 14:08.8 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**7** शुक्ल त्रयोदशी 14:28.3 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**8** शुक्ल चतुर्दशी 14:12.5 तक पूर्णिमा प्रारम्भ	**9** भाद्रपद कृष्ण पूर्णिमा 13:25.0 तक भाद्रपद कृष्ण प्रथमा प्रारम्भ
10 भाद्रपद कृष्ण प्रथमा 12:10.5 तक द्वितीया प्रारम्भ	**11** कृष्ण द्वितीया 10:34.2 तक तृतीया प्रारम्भ	**12** कृष्ण तृतीया 08:41.3 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**13** कृष्ण चतुर्थी 06:36.6 तक पंचमी प्रारम्भ	**14** कृष्ण पंचमी 04:24.1 तक षष्ठी प्रारम्भ	**15** कृष्ण षष्ठी 02:07.7 तक सप्तमी प्रारम्भ सप्तमी 23:50.3 तक अष्टमी प्रारम्भ	**16** कृष्ण अष्टमी 21:35.0 तक नवमी प्रारम्भ
17 भाद्रपद कृष्ण नवमी 19:24.9 तक दशमी प्रारम्भ	**18** कृष्ण दशमी 17:23.0 तक एकादशी प्रारम्भ	**19** कृष्ण एकादशी 15:33.1 तक द्वादशी प्रारम्भ	**20** कृष्ण द्वादशी 13:59.1 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**21** भाद्रपद कृष्ण त्रयोदशी 12:45.4 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**22** कृष्ण चतुर्दशी 11:56.5 तक अमावस्या प्रारम्भ	**23** कृष्ण अमावस्या 11:36.5 तक भाद्रपद शुक्ल प्रथमा प्रारम्भ
24 भाद्रपद शुक्ल प्रथमा 11:48.9 तक द्वितीया प्रारम्भ	**25** शुक्ल द्वितीया 12:35.3 तक तृतीया प्रारम्भ	**26** शुक्ल तृतीया 13:55.2 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**27** शुक्ल चतुर्थी 15:44.9 तक पंचमी प्रारम्भ	**28** शुक्ल पंचमी 17:57.4 तक षष्ठी प्रारम्भ	**29** शुक्ल षष्ठी 20:22.4 तक सप्तमी प्रारम्भ	**30** शुक्ल सप्तमी 22:47.1 तक अष्टमी प्रारम्भ

माह की खगोलीय घटनाएँ

12 अगस्त - शुक्र - बृहस्पति युति । प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में क्षितिज से लगभग 60 अंश ऊपर शुक्र एवं बृहस्पति ग्रह एक साथ दिखाई देंगे। शुक्र लटटू की तरह चमकदार दिखाई देगा।

12 अगस्त – चन्द्रमा - शनि युति । रात्रि 10:00 बजे के बाद चन्द्रमा एवं शनि ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

19 अगस्त - चन्द्रमा - बृहस्पति युति । प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

20 अगस्त – चन्द्रमा - शुक्र युति । प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

26 अगस्त - चन्द्रमा - मंगल युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

माह के शासकीय अवकाश - 09 रक्षाबंधन, 15 स्वतंत्रता दिवस, 16 जन्माष्टमी।

माह के ऐच्छिक अवकाश - 09 जनजातीय दिवस, 13 दुर्गादास राठौर जयंती, 14 बलराम जयंती, 15 पारसी नववर्ष दिवस, 27 गणेश चतुर्थी, 30 नवाखाई।

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, मध्यप्रदेश

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन का प्रमाणित कैलेण्डर

सितम्बर

ब्रह्मा की आयु

कल्प :- 14 मन्वन्तर का एक कल्प होता है। प्रत्येक मन्वन्तर के अन्त में तथा कल्पादि में सतयुग के बराबर की एक सन्धि होती है।

1 कल्प = 14 मन्वन्तर तथा सध्यांश के 15 सतयुग

= 14 x 30,67,20,000 + 15 x 17,28,000 = 4,32,00,00,000 वर्ष

30 कल्पों के नाम :-

1. श्वेत वराह	2. नीललोहित	3. वामदेव	4. रथंतर	5. रौरव
6. देव या प्राण	7. बृहत्	8. कंदर्प	9. सद्म या सत्य	10. ईशान
11. तम या व्यान	12. सारस्वत	13. उदान	14. गरुड़	15. कौर्म
16. नारसिंह	17. समान	18. आग्नेय या आग्नेय	19. सोम	20. मानव
21. तत्पुरुष या पुमान्	22. वैकुंठ	23. लक्ष्मी	24. सावित्री	25. घोर
26. वराह	27. वैराज	28. गौरी	29. माहेश्वर	30. पितृ

ब्रह्मा का एक दिन :- 1 कल्प = ब्रह्मा का एक दिन, इतनी ही बड़ी ब्रह्मा की एक रात।

दिन-रात को मिलाकर ब्रह्मा का एक दिन = 2 x 4,32,00,00,000 वर्ष

ब्रह्मा की आयु :- ब्रह्मा का एक वर्ष 360 दिन एवं ब्रह्मा आयु 100 वर्ष मानी गई है।

ब्रह्मा की आयु = 2 x 360 x 100 x 4,32,00,00,000 वर्ष

= 31,10,40,00,00,00,000 वर्ष

(सूर्य सिद्धांत-मध्यमाधिकार श्लोक 18-21)

द्रव्य की आयु = 3.1104×10^{14} सौर वर्ष या 1.1361×10^{17} सौर दिवस

इसे **परार्द्ध** कहते है। यह काल का सबसे बड़ा मान है। 100 वर्ष पश्चात् ब्रह्मा अर्थात् द्रव्य की मृत्यु हो जाती है।

कलियुग का आरम्भ ईसा से 3102 वर्ष पूर्व 20 फरवरी को 2 बजकर 27 मिनट 30 सेकन्ड पर माना गया है।

भाद्र – अश्विन — **- SEPTEMBER -** — Bhadra - Asvina

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
	1 भाद्रपद शुक्ल अष्टमी 00:58.2 तक नवमी प्रारम्भ	**2** शुक्ल नवमी 02:43.5 तक दशमी प्रारम्भ	**3** शुक्ल दशमी 03:53.4 तक एकादशी प्रारम्भ	**4** शुक्ल एकादशी 04:22.4 तक द्वादशी प्रारम्भ	**5** शुक्ल द्वादशी 04:08.6 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**6** शुक्ल त्रयोदशी 03:13.6 तक चतुर्दशी प्रारम्भ
7 शुक्ल चतुर्दशी 01:41.6 तक पूर्णिमा प्रारम्भ पूर्णिमा 23:38.8 तक अश्विन कृष्ण प्रथमा प्रारम्भ	**8** अश्विन कृष्ण प्रथमा 21:12.3 तक द्वितीया प्रारम्भ	**9** कृष्ण द्वितीया 18:29.6 तक तृतीया प्रारम्भ	**10** कृष्ण तृतीया 15:38.5 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**11** कृष्ण चतुर्थी 12:46.0 तक पंचमी प्रारम्भ	**12** कृष्ण पंचमी 09:59.1 तक षष्ठी प्रारम्भ	**13** कृष्ण षष्ठी 07:23.7 तक सप्तमी प्रारम्भ
14 अश्विन कृष्ण सप्तमी 05:04.9 तक अष्टमी प्रारम्भ	**15** कृष्ण अष्टमी 03:06.6 तक नवमी प्रारम्भ	**16** कृष्ण नवमी 01:31.8 तक दशमी प्रारम्भ	**17** कृष्ण दशमी 00:22.6 तक एकादशी प्रारम्भ एकादशी 23:40.2 तक द्वादशी प्रारम्भ	**18** कृष्ण द्वादशी 23:25.0 तक त्रयोदशी प्रारम्भ	**19** कृष्ण त्रयोदशी 23:37.5 तक चतुर्दशी प्रारम्भ	**20** अश्विन कृष्ण चतुर्दशी पूर्ण दिवस
21 अश्विन कृष्ण चतुर्दशी 00:17.4 तक अमावस्या प्रारम्भ	**22** अश्विन कृष्ण अमावस्या 01:24.1 तक अश्विन शुक्ल प्रथमा प्रारम्भ	**23** शुक्ल प्रथमा 02:56.5 तक द्वितीया प्रारम्भ	**24** शुक्ल द्वितीया 04:52.1 तक तृतीया प्रारम्भ	**25** शुक्ल तृतीया 07:06.5 तक चतुर्थी प्रारम्भ	**26** शुक्ल चतुर्थी 09:33.6 तक पंचमी प्रारम्भ	**27** शुक्ल पंचमी 12:04.2 तक षष्ठी प्रारम्भ
28 अश्विन शुक्ल षष्ठी 14:27.7 तक सप्तमी प्रारम्भ	**29** शुक्ल सप्तमी 16:32.2 तक अष्टमी प्रारम्भ	**30** शुक्ल अष्टमी 18:06.6 तक नवमी प्रारम्भ				

माह की खगोलीय घटनाएँ

7- 8 सितम्बर - पूर्ण चन्द्र ग्रहण । भारत में दृश्य होगा। ग्रहण का प्रारम्भ भारतीय मानक समय के अनुसार रात्रि 21:56:08 बजे पर होगा,मध्य की स्थित रात्रि 23:41:08 बजे पर एवं मोक्ष रात्रि 01:26:08 बजे पर होगा।

8 सितम्बर – चन्द्रमा - शनि युति। सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शनि ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

16 सितम्बर - चन्द्रमा - बृहस्पति युति । प्रात: सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

19 सितम्बर - चन्द्रमा - शुक्र युति । प्रात: सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

21-22 सितम्बर – आंशिक सूर्य ग्रहण - भारत में दृश्य नहीं होगा। ग्रहण का प्रारम्भ भारतीय मानक समय के अनुसार रात्रि 22:59:08 बजे पर होगा,मध्य की स्थित रात्रि 01:11:09 बजे पर एवं मोक्ष रात्रि 03:23:06 बजे पर होगा ।

23 सितम्बर - सूर्य विषुवत रेखा पर लम्बवत होने के कारण दिन व रात बराबर (12-12 घण्टे के) होंगे ।

24 सितम्बर – चन्द्रमा - मंगल युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

माह के शासकीय अवकाश - 05 मिलाद -उन- नबी।

माह के ऐच्छिक अवकाश - 02 तेजाजी महाराज का निर्वाण दिवस, तेजा दशमी, 03 डोलग्यारस , 05 ओणम , 06 अनन्त चतुर्दशी ,17 विश्वकर्मा जयंती, 18 राजा शंकर शाह तथा रघुनाथ शाह का बलिदान दिवस, 20 प्राणनाथ जयंती, 22 अग्रसेन जयंती, 30 दशहरा (महाअष्टमी),।

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, मध्यप्रदेश

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन का प्रमाणित कैलेण्डर

अक्टूबर

संवत्सर

कल्प सम्वत् :- नव संवत्सर 09 अप्रैल 2024 को आधार मानकर गणना करते हैं तो हम ब्रह्मा के दिन से द्वितीय परार्द्ध में श्वेत वराह कल्प में सातवें वैवस्वत मन्वन्तर में अट्ठाइसवें कलियुग के प्रथम चरण में प्रवेश कर चुके हैं। इस समय कलियुग के 5125 वर्ष बीत चुके हैं।

कल्प की आदि सध्यां	=	17,28,000 सौरवर्ष
6 मन्वन्तर तथा 6 मन्वन्तरों के 6 सध्यांश = 6 x 30,67,20,000 + 6 x 17,28,000	=	1,85,06,88,000 सौरवर्ष
सातवें मन्वंतर के 27 महायुग = 27 x 43,20,000	=	11,66,40,000 सौरवर्ष
28 में महायुग का सत्युग + त्रेता + द्वापर = 17,28,000 + 12,96,000 + 8,64,000	=	38,88,000 सौरवर्ष
कलियुग के 5125 वर्ष	=	5125 सौरवर्ष
कल्पादि सम्वत्	**=**	**1,97,29,49,125 सौरवर्ष**

इस प्रकार कल्प के प्रारंभ से 9 अप्रैल 2024 को 1,97,29,49,125 वाँ वर्ष प्रारम्भ हो चुका है। (सूर्य सिद्धांत-मध्यमाधिकार श्लोक 21-23)

कल्पादि के बाद ब्रह्मा को आनुषंगिक रचना (चराचर जगत बनाने) में 47400 दिव्य वर्ष अर्थात् 47400 x 360 =17064000 सौरवर्ष लगे।

सृष्टि सम्वत् = 1,97,29,49,125-17064000 = **1,95,58,85,125** सौरवर्ष

(सूर्य सिद्धांत-मध्यमाधिकार श्लोक 24)

यही कल्पादि और सृष्ट्यादि कालमान का अन्तर है।

60 संवत्सर के नाम :- संवत्सर, संस्कृत शब्द है जिसका अर्थ 'वर्ष' होता है। मानसागरी के अनुसार निम्नलिखित 60 संवत्सर होते हैं।

1. प्रभव	2. विभव	3. शुक्ल	4. प्रमोद	5. प्रजापति
6. अंगिरा	7. श्रीमुख	9. युवा	10. धाता	11. ईश्वर
12. बहुधान्य	13. प्रमाथी	14. विक्रम	15. वृषप्रजा	16. चित्रभानु
17. सुभानु	18. तारण	19. पार्थिव	20. व्यय	21. सर्वजीत
22. सर्वधारी	23. विरोधी	24. विकृति	25. खर	26. नंदन
27. विजय	28. जय	29. मन्मथ	30. दुर्मुख	31. हेमलंबी
32. विलंबी	33. विकारी	34. शार्वरी	35. प्लव	36. शुभ
37. शोभन	38. क्रोधी	39. विश्वावसु	40. पराभव	41. प्लवंग
42. कीलक	43. सौम्य	44. साधारण	45. विरोधकृत	46. परिधावी
47. प्रमादी	48. आनंद	49. राक्षस	50. नल	51. पिंगल
52. कालयुक्त	53. सिद्धार्थी	54. रुद्र	55. दुर्मति	56. दुन्दुभी
57. रूधिरोद्गारी	58. रक्ताक्षी	59. क्रोधन	60. क्षय	

अश्विन – कार्तिक — OCTOBER — Asvina - Kartika

माह की खगोलीय घटनाएँ

6 अक्टूबर – चन्द्रमा - शनि युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शनि ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।
13 अक्टूबर - चन्द्रमा - बृहस्पति युति । मध्यरात्रि में चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।
14 अक्टूबर – चन्द्रमा - शनि युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शनि ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।
19 अक्टूबर – चन्द्रमा - शुक्र युति । प्रातः सूर्योदय से पहले पूर्व दिशा में चन्द्रमा एवं शुक्र ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।
23 अक्टूबर – चन्द्रमा - मंगल युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं मंगल ग्रह एक साथ दिखाई देंगे।

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरुवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
			1 **अश्विन शुक्ल** नवमी 19:01.6 तक **दशमी प्रारम्भ**	**2** **शुक्ल** दशमी 19:11.4 तक **एकादशी प्रारम्भ**	**3** **शुक्ल** एकादशी 18:33.6 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	**4** **शुक्ल** द्वादशी 17:09.8 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**
5 **अश्विन शुक्ल** त्रयोदशी 15:04.4 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ**	**6** **शुक्ल** चतुर्दशी 12:24.2 तक **पूर्णिमा प्रारम्भ**	**7** **कार्तिक कृष्ण** पूर्णिमा 09:17.6 तक **कार्तिक कृष्ण** **प्रथमा प्रारम्भ**	**8** **कृष्ण** प्रथमा 05:53.9 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	**9** **कृष्ण** द्वितीया 02:23. तक **तृतीया प्रारम्भ** तृतीया 22:55.0 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**	**10** **कृष्ण** चतुर्थी 19:39.1 तक **पंचमी प्रारम्भ**	**11** **कृष्ण** पंचमी 16:44.1 तक **षष्ठी प्रारम्भ**
12 **कार्तिक कृष्ण** षष्ठी 14:17.5 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	**13** **कृष्ण** सप्तमी 12:24.9 तक **अष्टमी प्रारम्भ**	**14** **कृष्ण** अष्टमी 11:10.1 तक **नवमी प्रारम्भ**	**15** **कृष्ण** नवमी 10:34.2 तक **दशमी प्रारम्भ**	**16** **कृष्ण** दशमी 10:36.1 तक **एकादशी प्रारम्भ**	**17** **कृष्ण** एकादशी 11:12.7 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	**18** **कृष्ण** द्वादशी 12:19.6 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**
19 **कार्तिक कृष्ण** त्रयोदशी 13:52.1 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ**	**20** **कार्तिक कृष्ण** चतुर्दशी 15:45.4 तक **अमावस्या प्रारम्भ**	**21** **कार्तिक कृष्ण** अमावस्या 17:55.1 तक **कार्तिक शुक्ल** **प्रथमा प्रारम्भ**	**22** **कार्तिक शुक्ल** प्रथमा 20:17.5 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	**23** **शुक्ल** द्वितीया 22:47.2 तक **तृतीया प्रारम्भ**	**24** **शुक्ल** **तृतीया पूर्ण दिवस**	**25** **शुक्ल** तृतीया 01:20.0 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**
26 **कार्तिक शुक्ल** चतुर्थी 03:48.4 तक **पंचमी प्रारम्भ**	**27** **शुक्ल** पंचमी 06:05.4 तक **षष्ठी प्रारम्भ**	**28** **शुक्ल** षष्ठी 08:00.3 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	**29** **शुक्ल** सप्तमी 09:23.7 तक **अष्टमी प्रारम्भ**	**30** **शुक्ल** अष्टमी 10:07.0 तक **नवमी प्रारम्भ**	**31** **शुक्ल** **नवमी 10:04.1 तक** **दशमी प्रारम्भ**	

माह के शासकीय अवकाश - 2 गांधी जयंती/ दशहरा(विजयादशमी), 07 महर्षि वाल्मीकि जयंती (कोषागारों एवं उप-कोषागारों के लिए यह अवकाश नहीं), 20 दीपावली, 21 गोवर्धन पूजा।

माह के ऐच्छिक अवकाश - 01 दशहरा (महानवमी), 07 महाराज अजमोढ़ देव जयंती/ टेकचंद जी महाराज का समाधि उत्सव,10 करवाचौथ पर्व, 21 दीपावली का दूसरा दिन, 23 भाईदूज, 27 छठ पूजा, 28 भगवान सहस्त्रबाहु जयंती।

नवम्बर

पञ्चाङ्ग

भारतीय वार्षिक कालगणना को जिस दस्तावेज में संग्रहित कर प्रस्तुत किया जाता है, उसे पञ्चाङ्ग कहते हैं।

पञ्चाङ्ग के पांच अंग (पंच + अंग) होते हैं।

1. तिथि
2. वार
3. नक्षत्र
4. योग
5. करण

काल के इन पांच अंगों का समावेश पञ्चाङ्ग में होता है। यह पांच अंग सूर्य और चंद्र की गति तथा स्थिति पर आधारित होते हैं।

1. **तिथि :-** सूर्य और चंद्र के बीच 12 अंश के अंतर को तिथि कहते हैं। एक मास में 30 तिथियां होती हैं, यह तिथियां 15 - 15 दिन के दो पक्षों में विभाजित होती है, शुक्ल पक्ष और कृष्ण पक्ष।
2. **वार :-** सूर्योदय से दूसरे दिन के सूर्योदय तक के समय को वार कहते हैं। वार 1 दिन का यानी 24 घंटे का होता है, इसे अहोरात्र भी कहते हैं।
3. **नक्षत्र :-** क्रांति वृत्त के प्रारंभ से प्रत्येक 13 अंश 20 कला के विभाग को नक्षत्र कहते हैं। अश्विनी से रेवती तक 27 नक्षत्र होते हैं। कुछ ग्रंथकारों ने अभिजित नक्षत्र को 28 वां नक्षत्र माना है ।
4. **योग :-** सूर्य और चंद्रमा के राश्यादि मिलाने के बाद जो राश्यादि आते हैं उसके 13 अंश 20 कला के विभाग को योग कहते हैं। 27 योग होते हैं।
5. **करण :-** सूर्य और चंद्रमा के 6 अंश के अंतर को करण कहते हैं अर्थात् एक तिथि के आधे भाग को एक करण कहते हैं और 15 करण शुक्ल पक्ष में और 15 करण कृष्ण पक्ष में होते हैं।

कार्तिक – अग्रहायण -NOVEMBER- Kartik - Agrahayan

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
30 **शुक्ल** दशमी 21:29.6 तक **एकादशी प्रारम्भ**	**माह की खगोलीय घटनाएँ** **2 नवम्बर – चन्द्रमा - शनि युति ।** सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शनि ग्रह पास-पास दिखाई देंगे। **10 नवम्बर - चन्द्रमा - बृहस्पति युति ।** मध्यरात्रि में चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह एक साथ दिखाई देंगे। **29 नवम्बर – चन्द्रमा - शनि युति ।** सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शनि ग्रह पास-पास दिखाई देंगे।					**1** **कार्तिक शुक्ल** दशमी 09:12.2 तक **एकादशी प्रारम्भ**
2 **कार्तिक शुक्ल** एकादशी 07:32.0 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	**3** **शुक्ल** द्वादशी 05:07.8 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**	**4** **शुक्ल** त्रयोदशी 02:06.3 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ** चतुर्दशी 22:36.7 तक **पूर्णिमा प्रारम्भ**	**5** **कार्तिक कृष्ण** पूर्णिमा 18:49.2 तक **अग्रहायण कृष्ण** **प्रथमा प्रारम्भ**	**6** **अग्रहायण कृष्ण** प्रथमा 14:15.2 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	**7** **कृष्ण** द्वितीया 11:05.9 तक **तृतीया प्रारम्भ**	**8** **कृष्ण** तृतीया 07:32.6 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**
9 **अग्रहायण कृष्ण** चतुर्थी 04:26.1 तक **पंचमी प्रारम्भ**	**10** **कृष्ण** पंचमी 01:55.8 तक **षष्ठी प्रारम्भ**	**11** **कृष्ण** षष्ठी 00:08.8 तक **सप्तमी प्रारम्भ** सप्तमी 23:09.5 तक **अष्टमी प्रारम्भ**	**12** **कृष्ण** अष्टमी 22:59.0 तक **नवमी प्रारम्भ**	**13** **कृष्ण** नवमी 23:34.6 तक **दशमी प्रारम्भ**	**14** **कृष्ण** **दशमी पूर्ण दिवस**	**15** **कृष्ण** दशमी 00:50.3 तक **एकादशी प्रारम्भ**
16 **अग्रहायण कृष्ण** एकादशी 02:37.8 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	**17** **कृष्ण** द्वादशी 04:48.1 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**	**18** **कृष्ण** त्रयोदशी 07:12.6 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ**	**19** **कृष्ण** चतुर्दशी 09:44.1 तक **अमावस्या प्रारम्भ**	**20** **अग्रहायण कृष्ण** अमावस्या 12:17.2 तक **अग्रहायण शुक्ल** **प्रथमा प्रारम्भ**	**21** **अग्रहायण शुक्ल** प्रथमा 14:47.8 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	**22** **अग्रहायण शुक्ल** द्वितीया 17:11.9 तक **तृतीया प्रारम्भ**
23 **अग्रहायण शुक्ल** तृतीया 19:25.3 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**	**24** **शुक्ल** चतुर्थी 21:22.7 तक **पंचमी प्रारम्भ**	**25** **शुक्ल** पंचमी 22:57.5 तक **षष्ठी प्रारम्भ**	**26** **शुक्ल** **षष्ठी पूर्ण दिवस**	**27** **शुक्ल** षष्ठी 00:02.5 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	**28** **शुक्ल** सप्तमी 00:30.5 तक **अष्टमी प्रारम्भ**	**29** **शुक्ल** अष्टमी 00:15.9 तक **नवमी प्रारम्भ** नवमी 23:15.5 तक **दशमी प्रारम्भ**

माह के शासकीय अवकाश - 05 गुरूनानक जयंती,15 राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस (भगवान बिरसा मुण्डा जयंती) (कोषागारों एवं उप-कोषागारों के लिए यह अवकाश नहीं)।

माह के ऐच्छिक अवकाश - 01 नामदेव जयंती, 22 झलकारी जयंती, 24 गुरू तेगबहादुर का शहीदी दिवस, 27 संत श्री जिनतरण तारण जयंती ।

महर्षि पतंजलि संस्कृत संस्थान, मध्यप्रदेश

शासकीय जीवाजी वेधशाला, उज्जैन का प्रमाणित कैलेण्डर

दिसम्बर

संकल्प मंत्र

हमारे यहाँ कोई भी धार्मिक कार्य हो उसमें बोला जाने वाला संकल्प मंत्र, अनन्तकाल से आज तक के समय को बताने वाला मंत्र है।
संकल्प मंत्र इस प्रकार है -
ऊँ अस्य श्री विष्णोराज्ञ्या प्रवर्तमानस्य, ब्रह्माणां द्वितीय परार्धे, श्वेत वराह कल्पे, वैवस्वत मन्वन्तरे, अष्टाविंशतितमे कलियुगे, कलियुगे प्रथमचरणे, कलिसंवते या युगाब्दे, जम्बुदीपे, ब्रह्मावर्त देशे, भरत खण्डे, अमुक स्थाने, अमुक सम्वत्सरे, अमुक अयने, अमुक ऋतौं, अमुक मासे, अमुक पक्षे, अमुक तिथौ, अमुक वासरे, अमुक समये, अमुक व्यक्ति, अमुक उद्देश्ये। बोलकर संकल्प करवाया जाता है।
इस मंत्र का विवरण निम्नानुसार है -
अस्य श्री विष्णोराज्ञया प्रर्वतमानस्य - महाविष्णु द्वारा प्रवर्तित अन्तकाल चक्र में वर्तमान
ब्रह्माणा द्वितीय परार्धे - ब्रह्मा की आयु का द्वितीय परार्ध (अर्थात् ब्रह्मा की आयु के 50 वर्ष पूर्ण हो गये)
श्वेतवाराह कल्पे - 50 वर्ष पूर्ण उपरांत 51 वर्ष का प्रथम दिन (कल्प) जिसे श्वेतवाराह नाम से जाना गया है
वैवस्वत मन्वन्तरे - ब्रह्मा के एक दिन में 14 मन्वन्तर होते है उनमें से वैवस्वत नाम का सातवाँ मन्वन्तर
अष्टाविंशतितमे कलियुगे, कलियुगे प्रथमचरणे - एक मन्वन्तर में 71 चतुर्युगी होती है। उनमें से 28 वीं चतुर्युगी के कलियुग का प्रथम चरण प्रारम्भ
कलिसंवते या युगाब्दे - वर्तमान सृष्टिसम्वत् -1,96,08,53,125 एवं 30 मार्च 2025 से 1,96,08,53,126 कलिसम्वत् या युगाब्द जो वर्तमान वर्ष में 5125 चल रहा है। 30 मार्च 2025 से 5126
जम्बुद्वीपे, ब्रह्मावर्तदेश, भरतखण्डे - प्राचीन भारतीय महाद्वीप जम्बुद्वीप कहलाता था। जम्बुद्वीप में ब्रह्मावर्त देश का भरत खण्ड का स्थान
अमुक स्थाने - उस स्थान का नाम जहां संकल्प लिया जा रहा है। जैसे - उज्जैन स्थाने
अमुक सम्वत्सरे - सम्वत्सर का नाम जैसे - वर्तमान सम्वत्सर 2081 का नाम पिंगल सम्वत्सर है। 30 मार्च 2025 से सम्वत्सर 2082 का नाम कालयुक्त सम्वत्सर रहेगा
अमुक अयने - सूर्य उत्तरायण है या दक्षिणायन , कौन सा अयन है
अमुक ऋतौं - कौन सी ऋतु है (शरद, शिशिर, हेमन्त, बसन्त, ग्रीष्म एवं वर्षा)
अमुक मासे - चैत्र आदि 12 मासों में से कौन सा मास है
अमुक पक्षे - कृष्ण या शुक्ल कौन सा पक्ष है
अमुक तिथौ - तिथि का नाम (प्रतिपदा, द्वितीय आदि)
अमुक वासरे - वार का नाम (रविवार, सोमवार आदि)
अमुक समये - कौन सा समय
अमुक व्यक्ति - संकल्प लेने वाले व्यक्ति का नाम, पिता नाम का नाम, गोत्र आदि
अमुक उद्देश्ये - किस उद्देश्य के लिए संकल्प लिया जा रहा है
इस प्रकार हम देखते हैं कि संकल्प लेते समय हम अनन्तकाल चक्र के वर्तमान समय को पूर्णतःस्मरण करते हैं। यह **भारतीय जीवन पद्धति की पूर्ण वैज्ञानिकता** का सहज उदाहरण है। इस प्रकार हम पूर्ण सम्मान एवं निष्ठा से कह सकते हैं कि परम्परागत खगोल विज्ञान का विकास हमारे मनीषियों ने अत्यन्त चिन्तन, मनन एवं सुस्पष्ट अवलोकन उपरांत किया तथा उसे सहज व्यवहार में लाने का भी पूर्ण प्रयास किया।

अग्रहायण - पौष **-DECEMBER-** Agrahayan - Pausha

रविवार Sunday	सोमवार Monday	मंगलवार Tuesday	बुधवार Wednesday	गुरूवार Thursday	शुक्रवार Friday	शनिवार Saturday
	1 **अग्रहायण शुक्ल** एकादशी 19:01.5 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	2 **शुक्ल** द्वादशी 15:57.5 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**	3 **पौष शुक्ल** त्रयोदशी 12:26:3 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ**	4 **शुक्ल** चतुर्दशी 08:38.1 तक **पूर्णिमा प्रारम्भ**	5 **अग्रहायण शुक्ल** पूर्णिमा 04:44.1 तक **प्रथमा प्रारम्भ**	6 **पौष कृष्ण** प्रथमा 00:56.2 तक **द्वितीया प्रारम्भ** द्वितीया 21:26.3 तक **तृतीया प्रारम्भ**
7 **पौष कृष्ण** तृतीया 18:25.5 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**	8 **कृष्ण** चतुर्थी 16:03.9 तक **पंचमी प्रारम्भ**	9 **कृष्ण** पंचमी 14:29.5 तक **षष्ठी प्रारम्भ**	10 **कृष्ण** षष्ठी 13:47.1 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	11 **कृष्ण** सप्तमी 13:57.6 तक **अष्ठमी प्रारम्भ**	12 **कृष्ण** अष्टमी 14:57.3 तक **नवमी प्रारम्भ**	13 **कृष्ण** नवमी 16:38.5 तक **दशमी प्रारम्भ**
14 **पौष कृष्ण** दशमी 18:50.2 तक **एकादशी प्रारम्भ**	15 **कृष्ण** एकादशी 21:20.5 तक **द्वादशी प्रारम्भ**	16 **कृष्ण** द्वादशी 23:57.8 तक **त्रयोदशी प्रारम्भ**	17 **कृष्ण** **त्रयोदशी पूर्ण दिवस**	18 **कृष्ण** त्रयोदशी 02:33.1 तक **चतुर्दशी प्रारम्भ**	19 **कृष्ण** चतुर्दशी 04:59.7 तक **अमावस्या प्रारम्भ**	20 **पौष कृष्ण** अमावस्या 07:13.3 तक **प्रथमा प्रारम्भ**
21 **पौष शुक्ल** प्रथमा 09:11.5 तक **द्वितीया प्रारम्भ**	22 **शुक्ल** द्वितीया 10:52.3 तक **तृतीया प्रारम्भ**	23 **शुक्ल** तृतीया 12:13.3 तक **चतुर्थी प्रारम्भ**	24 **शुक्ल** चतुर्थी 13:11.6 तक **पंचमी प्रारम्भ**	25 **शुक्ल** पंचमी 13:43.1 तक **षष्ठी प्रारम्भ**	26 **शुक्ल** षष्ठी 13:44.1 तक **सप्तमी प्रारम्भ**	27 **शुक्ल** सप्तमी 13:10.3 तक **अष्टमी प्रारम्भ**
28 **शुक्ल** अष्टमी 11:59.9 तक **नवमी प्रारम्भ**	29 **शुक्ल** नवमी 10:12.9 तक **दशमी प्रारम्भ**	30 **शुक्ल** दशमी 07:51.6 तक **एकादशी प्रारम्भ**	31 **शुक्ल** एकादशी 05:01.0 तक **द्वादशी प्रारम्भ**			

माह की खगोलीय घटनाएँ

7 दिसम्बर - चन्द्रमा - बृहस्पति युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं बृहस्पति ग्रह पास-पास दिखाई देंगे।
27 दिसम्बर - चन्द्रमा - शनि युति । सायं सूर्यास्त के बाद चन्द्रमा एवं शनि ग्रह पास-पास दिखाई देंगे।
22 दिसम्बर - सूर्य मकर रेखा पर लम्बवत होने के कारण उत्तरी गोलार्ध में दिन सबसे छोटा तथा रात सबसे बड़ी होगी। इस दिन स्थानीय समय 12 बजे मकर रेखा के नजदीक स्थित देशों के समस्त स्थानों पर परछाई कुछ समय के लिए शून्य हो जायेगी।

माह के शासकीय अवकाश - 25 ख्रीस्त जयंती (क्रिसमस)
माह के ऐच्छिक अवकाश - 03 विश्व विकलांग दिवस, 04 दत्तात्रेय जयंती/ क्रांतिसूर्य टंट्या भील बलिदान दिवस, 18 गुरु घासीदास जयंती, 27 महाराजा खेतसिंह खंगार जी की जयंती, 31 बालीनाथ जी बैरवा जयंती।